Dr. Vandana Suman
Professor
Dept. of Philosophy
H.D. Jain College, Ara
UG - Sem - IV - MJC-07
Basic Concepts of Philosophy

(उपमान प्रमाण)

उपमान कहते हैं समानधर्मि साकल्यता या समान जातीयता को। किसी जानी हुई वस्तु के सादृश्य से किसी न जानी हुई वस्तु का ज्ञान प्राप्त करना ही 'उपमान' प्रमाण है। काव्यशास्त्र की भाषा में कहा जाय तो कहना चाहिए कि किसी प्रसिद्ध वस्तु के साधर्म्य से किसी अप्रसिद्ध वस्तु का ज्ञान प्राप्त करना ही 'उपमान' है। जैसे हमने गाय तो देखी है, किन्तु नीलगाय नहीं देखी है। कोई जंगल का रहनेवाला व्यक्ति आप से जब कहता है कि नीलगाय ठीक गाय जैसी ही होती है, तब आप जंगल में जाकर उसी आकार प्रकार का पशु देखकर यह समझ जाते हैं कि यही नीलगाय है। ऐसा ज्ञान उपमान प्रमाण के द्वारा होता है।

उपमिति — उपमान के द्वारा जो ज्ञान प्राप्त होता है उसे 'उपमिति' कहते हैं। अर्थात् एक वस्तु की उपमा या समानता के द्वारा दूसरी वस्तु का जो ज्ञान प्राप्त होता है उसे 'उपमिति' कहते हैं। उपमिति फल है और उपमान कारण। गाय वाचक है और नीलगाय वाच्य। घर पर देखी हुई गाय के आकार पर जंगल में हमें जिस नीलगाय का बोध होता है

Where there's hope, there's life. It fills us with fresh courage and makes us strong again.

वही वाचक (उपमान = गात्र का फल है।

Dr. Vandana Suman
Professor
Deptt. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
UG - Sem - IV - MJC-07
Basic Concepts of Philosophy

FRIDAY
MAY | 2025
30
WK 22 | 150-215

(शब्द प्रमाण)

हमारी श्रवणेन्द्रिय जिस अर्थ या विषय को ग्रहण करती है वही 'शब्द' है। शब्द 'वाचक' है क्योंकि वह वस्तु का संकेत है। शब्द दो प्रकार का होता है ध्वन्यात्मक और वर्णनात्मक। जो शब्द ध्वनि प्रधान होता है वह 'ध्वन्यात्मक' और जो शब्द वर्णों के द्वारा उच्चरित होता है वह 'वर्णनात्मक' कहलाता है। शंख का शब्द ध्वन्यात्मक का और मनुष्य की वाणी वर्णनात्मक शब्दों का उदाहरण है। यह वर्णनात्मक शब्द भी 'सार्थक' और 'निरर्थक' भेद से दो प्रकार का होता है। 'गाय', 'पुस्तक' आदि शब्द सार्थक है और बच्चों की किलकारियाँ निरर्थक। न्याय में सार्थक शब्द के अनेक प्रभेद बताये गये है।

शब्द को वस्तु का संकेत कहा है। 'गाय' तथा 'गमन' आदि संज्ञा तथा क्रिया के शब्दों के कहने से जो अर्थबोध होता है उसी को संकेत कहते हैं। शब्दों की इस अर्थबोध शक्ति (संकेत) को मीमांसक नैसर्गिक तथा नित्य मानते हैं; किन्तु नैयायिकों की दृष्टि से शब्द और अर्थ दोनों में कृत्रिम संबंध है। यह शब्द संकेत भी दो प्रकार का माना जाता है।

...to tell you no who doesn't have the power to say yes.

आजानिक और आधुनिक। आजानिक शब्द संकेत उसको कहते हैं जो अज्ञातकाल से चला आ रहा है और आधुनिक संकेत उसको कहते हैं, जो इच्छानिर्मित है। 'घट' शब्द को कहने से हमें जिस पात्र विशेष का बोध होता है वह परम्परा से अज्ञात रूप में चला आ रहा है, किन्तु अपने नवजात बच्चे का 'देवदत्त' यह नामकरण इच्छानिर्मित है।

गौतम ने कहा है कि आप्त व्यक्ति का उपदेश ही 'शब्दप्रमाण' है (आप्तोपदेशः शब्दः)। गौतम के इस सूत्र का भाष्य करते हुए वात्स्यायन ने लिखा है कि प्रत्यक्ष अनुभव से किसी विषय की जो जानकारी प्राप्त होती है उसे 'आप्ति' कहते हैं। इस शब्द से आप्त व्यक्ति वह हुआ, जिसने प्रत्यक्ष अनुभव से किसी पदार्थ का स्वयं साक्षात् किया है। ऐसा व्यक्ति दूसरों के उपकार के लिए जो कुछ भी कहता है वह माननीय है प्रामाणिक है। इसलिए शब्दप्रमाण न तो प्रत्यक्ष के अन्तर्गत आता है और न अनुमान की ही कोटि में। न्याय में इसको स्वतंत्र प्रमाण माना गया है।

If you don't like something, change it. If you can't change it, change your attitude

दृष्टार्थ और अदृष्टार्थ - यह शब्दप्रमाण दो प्रकार का माना गया है: दृष्टार्थ और अदृष्टार्थ। दृष्टार्थ कहते हैं प्रत्यक्ष दृष्ट, अर्थात लौकिक। जैसे - हांडी का एक चावल देखने से यह ज्ञात हो जाता है कि सभी चावल पक गये हैं। इसीप्रकार कुछ आप्त वाक्यों की प्रत्यक्ष सत्यता देखने के बाद अन्य वाक्यों की सत्यता पर विश्वास हो जाता है। अदृष्टार्थ कहते हैं पारलौकिक को। वैदिक वाक्य इसके उदाहरण हैं, क्योंकि उनका अर्थ लौकिक प्रत्यक्ष के द्वारा सिद्ध नहीं होता। नैयायिकों और वैशेषिकों का कथन है कि वेद आप्त वाक्य होने के कारण प्रामाणिक हैं। आप्त वाक्य अर्थात ईश्वर प्रणीत। न्याय वैशेषिक में इसी दृष्टि से वेद की प्रामाणिकता स्वीकार की गयी है। महात्माओं की विश्वासयोग्य बातें, धर्माचार्यों के वचन, न्यायालय में साक्षियों का कथन, धर्मग्रन्थों के विधान - ये सभी अदृष्टार्थ के अन्तर्गत आते हैं। यह अदृष्टार्थ तीन प्रकार का माना गया है:
विधिवाक्य (आज्ञासूचक वाक्य),
अर्थवाद (वर्णनात्मक वाक्य),
और अनुवाद (अनुवचन वाक्य)।

Seeing the best in your situation is the key tohappiness.